विज्ञान

हे ईश जगदाधार करुणागार, नारायण विभो ।
हे निर्विकार अपार गुण भण्डार दुःख मोचन प्रभो ।
इस अन्धकार कुमार्ग से, वह ज्ञान दीपक दिखाइये ।
हे निर्विकार निरीह निर्गुण, निज दया दर्शाइये ॥

परमात्मा प्रकृति को आकार देकर विशेष पदार्थ बनाता है । प्रत्युत बनाता ही नहीं वरन उसे नियमानुसार रखता भी है । जो नियम जगत् में राज्य करता है वह नियम मनुष्य के जीवन में भी राज्य करता है । धर्मात्मा पुरुष पर कोई आपत्ति नहीं आ सकती क्योंकि वह दुःख को कभी अनुभव ही नहीं करता । पाप की स्थिति धर्म को अधिक उज्ज्वल करती है । त्रुटि भागों में है यदि समग्र को देखा जाय तो उसमें त्रुटि नहीं । जो शब्द अपने आप में शोर प्रतीत होता है वह दूसरों के साथ मिल कर अद्भुत् राग उत्पन्न करता है । जब विश्वाग्नि सारे संसार को भस्म करता है तो केवल परमात्मा की स्थिति रहती है । धर्म को धर्म के लिये पालन करना चाहिये । धर्म का तत्व यह है कि मनुष्य अपने आत्मा को स्वतन्त्र रक्खे । जीवन एक संग्राम है पग पग पर आसुरी शक्तियां दैवी शक्तियों से युद्ध करती हैं । इस संग्राम में आसुरी भाव आपत्तियों का रूप धारण करती (करते) हैं । धीर बनो और संयम से रहो । मुख्योद्देश्य जीवन को अच्छा बनाना है । न्याय विज्ञान का मूल यही है कि इनकी (इसकी ?) सहायता से हम अच्छा जीवन व्यतीत कर सकते हैं । धर्म काम की वस्तु है किन्तु इस लिये कि यह सुख का साधन है । अपने आप में एक ही पदार्थ ढूंढने योग्य है और वह है सुख । विषयों का दास होना हमें भविष्यत् में सुख भोगने के अयोग्य बना देता है । समग्र जीवन के लिये हमें संयम की आवश्यकता है । ज्ञानी पुरुष वर्तमान सुखों का त्याग करता है यदि ऐसे त्याग से उसे भविष्यत् में अधिक सुख मिल सकता है । यही नहीं वह वर्तमान दुःखों को भी स्वीकार कर लेता है ताकि भविष्यत् में सुख भोग सके । मनुष्य के लिये जितना सम्भव हो अपनी आवश्यकताओं को घटाना उचित है । यदि मनुष्य की बुद्धि तीव्र है और उसके पास खाने पीने के लिये रोटी पानी है तो उसे देवताओं की अवस्था पर स्पृहा करने की आवश्यकता नहीं । आनन्द की उपलब्धि के लिये आवश्यक है कि मनुष्य बहुत से टण्टों से विमुक्त रहे । गृहस्थ का मार्ग कांटों से ढका हुवा है । अच्छे मित्र जीवन को सुखी बनाने के लिये एक अच्छा साधन है (हैं) । जितना तुम पड़ौसी का मान करते हो उतना ही अपना करो । परमात्मा उससे प्यार करता है जो अन्याय से घृणा करते हैं । मनुष्य के अन्दर एक देव (वाक्य ?) उसको प्रेरणा करता है । उसकी आज्ञायें केवल आचार सम्बन्ध में ही नहीं होती (होतीं) किन्तु कठिन दशाओं में भी उससे सहायता मिलती है । एक काम का विचारना ही पर्याप्त

नहीं परन्तु आवश्यक है हम इसे सोच विचारकर करें और जानें कि क्यों वह काम नेक है । आचार की नींव ज्ञान पर होनी चाहिये । आचार और ज्ञान का इतना गहरा सम्बन्ध है कि वह दोनों एक ही वस्तु है । सच्चे अर्थों में कोई अच्छा काम नहीं कर सकता जब तक उसे उसके तत्व का ज्ञान नहीं हो और उसके विपरीत कोई पुरुष ज्ञान रखता हुवा बुरा काम नहीं कर सकता । मद्य काल में भूल जाता है कि मद्यपान बुरा कर्म है । सदाचारी जीवन में सबसे बड़ा धर्म यह है कि मनुष्य अपने आप को जाने । सच्ची तपस्या इन्द्रिय संयम और दम है । यह जब (तब) ही सम्भव है कि मनुष्य को अपने चरित्र तथा दुर्बल अंश का ज्ञान हो । हमारे अन्दर देवासुर संग्राम हो रहा है । असुर प्रत्येक की अवस्था में विशेष दुर्बल अंश को ढूंढते हैं और उस पर प्रहार करते हैं । एक मनुष्य की अवस्था में यह अंश काम दूसरे की अवस्था में क्रोध और तीसरे की अवस्था में और कोई विषय होता है । जो मनुष्य अपने आप को नहीं जानता वह अपने दुर्बल अंश को भी नहीं जानता और इन्द्रियों को वश में रखने के अयोग्य है । सुन्दर वस्तुओं से प्रेम करना, भोग शक्ति का नितान्त नाश करना, (।) विषयों को वश में रखना उच्च आदर्श है । सुख प्राप्ति ही जीवन का आदर्श है । यदि मनुष्य विषयों पर शासन करता हुवा आनन्द प्राप्त कर सकता है तो उस में दोष नहीं । अपना जीवन कमल पुष्प के सदृश बनाना चाहिये । जो जल में रहता है पर जल में रच नहीं जाता । आत्मा बाह्य दशाओं से सर्वथा स्वतन्त्र होता है । मनुष्य परवश हो वा आत्मवश दरिद्र हो या धनवान् स्वतन्त्रता उस के हाथ में है । एक पुरुष जिसे संसार परवश समझता है राजकीय आत्मा रख सकता है ।